मनुष्य क्या है?

अध्याय 1

आदि में

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
सृष्टि 2
बाइबल की कहानियाँ 3
ऐतिहासिकता 4
उत्पत्ति 5
पुराना नियम 6
नया नियम 6
श्रेष्ठता 7
संरचना 9
भौतिक शरीर 10
अभौतिक आत्मा 11
उत्पत्ति 12
अमरता 13
त्रिभाजन 14
वाचा 15
ईश्वरीय परोपकार 17
मनुष्य की विश्वासयोग्यता 18
याजक होने के दायित्व 19
शाही दायित्व 20
परिणाम 21
उपसंहार 23

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मनुष्य क्या है?

अध्याय एक

आदि में

प्रस्तावना

क्या आप कभी बातचीत के बीच में पहुँचे हैं? या किसी नाटक पर पहुँचे हैं जब वह पहले ही शुरू हो चुका हो? या शायद आप किसी खेल प्रतिस्पर्धा में देरी से आये हों? खैर, यदि आपके साथ ऐसा हुआ है, तो आप जानते होंगे कि जब हम किसी चीज़ की शुरूआत को देखने से चूक जाते हैं, तो वह बहुत भ्रामक हो सकता है। जब हम नहीं जानते कि कहानी कैसे शुरु हुई, तो हमें समझने में मुश्किल होती है कि क्यों कुछ विवरण महत्वपूर्ण हैं, कौन कहानी का हीरो और कौन विलेन हैं, और कहानी का सम्पूर्ण सार क्या है। कुछ ऐसी ही बात तब सामने आती है जब हम मानव जाति पर विचार करते हैं। यह जानने के द्वारा कि हम यहाँ कैसे पहुँचे, हमारी परिस्थितियाँ ऐसी क्यों है, और हमें क्या करने की जरूरत है, एक बहुत बड़ी सहायता है, इस बात को अगर हम समझ जाएं तो।

मनुष्य क्या है? की हमारी श्रृंखला का यह पहला पाठ है, और हमने इसका शीर्षक, "आदि में" रखा है। इस पाठ में, हम पता लगायेंगे कि जब आदि में परमेश्वर ने हमें रचा, और अदन की वाटिका में रखा तो मनुष्य किस के समान थे। इस श्रृंखला का शीर्षक — *मनुष्य क्या है?* — अधिकांश मसीही लोगों के लिए परिचित विषय होना चाहिए, क्योंकि यह पवित्र शास्त्र में कई बार प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 8:4 कहता है:

> **तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? (भजन संहिता 8:4)।**

प्रत्येक बार जब बाइबल के पात्रों या लेखकों ने पूछा, "मनुष्य क्या है?" तो वे मनुष्य जाति के स्वभाव के बारे में सोच रहे थे। वे उन चीज़ों को जानना चाहते थे जैसे कि: परमेश्वर के सापेक्ष में हम क्या हैं, पृथ्वी पर हमारी भूमिका क्या है, और हमारे पास किस प्रकार की नैतिक क्षमताएं हैं। औपचारिक ईश्वरीय-ज्ञान के शब्दों में कहें तो, वे मानव-विज्ञान के बारे में प्रश्नों को पूछ रहे थे। "एन्थ्रोपोलॉजी" शब्द दो यूनानी मूल से निकलता है: *एन्थ्रोपोस* का *अर्थ* "आदमी" या "मनुष्य"; और *लोगॉस,* का अर्थ है "विज्ञान या अध्ययन।" अतः, "एन्थ्रोपोलॉजी" :

> **मनुष्य जाति का अध्ययन है।**

या ईश्वरीय-ज्ञान के संबंध में:

> **मानवता का सिद्धांत है।**

धर्मनिरपेक्ष अध्ययन के अंतर्गत, "मानव-विज्ञान" इन चीज़ों पर ध्यान-आकर्षण करता है जैसे समाज, संस्कृति, जीव विज्ञान और मनुष्यों का विकास। लेकिन बाइबलीय धर्मविज्ञान के अन्दर आने वाला मानव-विज्ञान बहुत संकुचित है। लूईस बरखॉफ, ने जो कि 1873 से 1957 तक रहे थे, अपनी पुस्तक *सिस्टमैटिक थियोलॉजी* के अध्याय 1 के भाग 2 में इसे इस तरह से परिभाषित किया है:

> **मानव-विज्ञान का धर्मविज्ञान** का संबंध केवल इस बात से है कि बाइबल मनुष्य के बारे में क्या कहता है और उस संबंध के बारे में है जो वह परमेश्वर के साथ रखता है और उसे रखना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दूसरे शब्दों में, जब ईश्वरीय-ज्ञान की बात आती है, तो मानव-विज्ञान *स्वयं* में मानवता का और परमेश्वर के साथ उसके *संबंध* का अध्ययन है।

शुरुआत में मनुष्य किस के समान थे, इस पर हमारा पाठ तीन भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम मानवता की सृष्टि को देखेंगे। दूसरा, हम अपने मनुष्यत्व की संरचना का वर्णन करेंगे। और तीसरा, हम परमेश्वर के साथ मनुष्य की प्रारंभिक वाचा पर गौर करेंगे। आइए मानवता की सृष्टि के साथ शुरू करते हैं।

सृष्टि

प्राचीन मध्य-पूर्व में, जब मूसा ने उत्पत्ति की पुस्तक को लिखा, वहाँ सृष्टि की रचना की कहानियाँ बेहद महत्वपूर्ण थीं। बाइबल के बाहर पाई जाने वाली संस्कृतियों में, सृष्टि की कहानियों ने आमतौर पर समझाया कि संसार को अपने आदर्श स्थिति में कैसा होना चाहिए था। उन्होंने वर्णन किया कि कैसे देवताओं ने मूल रूप से संसार को संचालित करने की योजना बनाई थी और उसके प्राणियों को विभिन्न भूमिकाएं सौंपी थी। और पवित्र शास्त्र सृष्टि की कहानियों का इसी तरह से उपयोग करता है।

बेशक, प्राचीन इस्राएल के इर्दगिर्द की संस्कृतियों में प्रचलित सृष्टि की कहानियाँ झूठी थीं। उन्होंने सृष्टि के कार्यों के लिए झूठे देवताओं का जिम्मेदार ठहराया। और उन्होंने अनुचित सामाजिक एवं राजनैतिक संरचनाओं को बढ़ावा देने के लिए, और मनुष्यों एवं दूसरे प्राणियों के बीच संबंधों को एक मिथ्या अर्थ देने हेतु स्वयं रचित कहानियों का प्रयोग किया।

इसके विपरीत, यह समझाने के लिए कि संसार के भीतर कार्य करने हेतु मनुष्य को मूल रूप से कैसे रचा गया था, बाइबल सृष्टि की सच्ची कहानी को बताती है। यही कारण है कि संसार को कैसे कार्य करना चाहिए और नैतिक रूप से मनुष्यों की क्या भूमिका होनी चाहिए, यह प्रमाणित करने के लिए बाइबल के कई अन्य भाग सृष्टि की कहानियों की तरफ संकेत करते हैं। धर्मविज्ञानी अकसर इन दायित्वों को "सृष्टि के अध्यादेशों" के रूप में संदर्भित करते हैं क्योंकि वे:

> **परमेश्वर के सृष्टि वाले कार्यों के द्वारा स्थापित नैतिक दायित्व है।**

विचार यह है कि परमेश्वर के कार्य सिद्ध हैं और इसलिए, वे हमारे अपने व्यवहार के लिए मानक हैं।

कभी-कभी सृष्टि के अध्यादेश स्पष्ट हैं, जैसे कि उत्पत्ति 1:28 में "फूलो-फलो" वाली परमेश्वर की आज्ञा। लेकिन अन्य अंतर्निहित हैं, जैसे कि सब्त को पवित्र मानने का हमारा दायित्व। सृष्टि की कहानियाँ स्पष्ट रूप से नहीं कहती कि मनुष्यों को प्रत्येक सातवें दिन विश्राम करना चाहिए। लेकिन दस आज्ञाओं में, निर्गमन 20:11 में, मूसा ने स्पष्ट किया कि छह दिन कार्य करने और सातवें दिन विश्राम करने का परमेश्वर का पैटर्न मनुष्य को भी ऐसा करने के लिए बाध्य करता है। इस तरह, जब हम मनुष्यों के महत्व और भूमिका के बारे में सोचते हैं, तो अपनी सृष्टि के साथ शुरू करना, स्वाभाविक एवं सहायक दोनों है।

हम तीन चरणों में मनुष्यों की सृष्टि का पता लगायेंगे। सबसे पहले, हम बाइबल में पाई जाने वाली सृष्टि की कहानियों को सारांशित करेंगे। दूसरा, हम आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता पर गौर कर। और तीसरा, परमेश्वर के जीवों के बीच में हम मानव जाति की श्रेष्ठता को देखेंगे। आइए सबसे पहले बाइबल की कहानियों को देखते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल की कहानियाँ

उत्पत्ति की पुस्तक में सृष्टि की दो कहानियाँ शामिल हैं। पहली उत्पत्ति 1:1–2:3 में है, और दूसरी उत्पत्ति 2:4-25 में है। ये दोनों कहानियाँ एक साथ मिलकर हमें सामान्य चित्र प्रदान करते हैं कि परमेश्वर ने हमें कैसे और क्यों बनाया।

> मैं सोचता हूँ, उत्पत्ति 1 और 2 में दर्ज सृष्टि की कहानियाँ, वास्तव में एक दूसरे के लिए पूरक हैं इसमें वे एक ही सत्यता पर ज़ोर देते हैं — वे पहली मानवीय संस्कृति की ओर देखते हैं जिसे परमेश्वर द्वारा बनाया गया जिसमें इस समय केवल दो मनुष्य ही रह रहे हैं — इसके अलावा यह उनकी संस्कृति को दो अलग-अलग पहलूओं से देखता है...वास्तव में, हमारे पास अध्याय 1 की सृष्टि की कहानी है, और यह संपूर्ण प्रक्रिया के बारे में बात करती है, लेकिन हमारे पास एक ऐसी खिड़की भी है जिससे होकर हम अध्याय 2 में मनुष्य के जीवन की सृष्टि के वर्णन जो की 6वे दिन में दर्ज है, के बारे में जान सकते है , और वास्तव में यह एक दूसरे के साथ उनके संबंध के बारे में अधिक बात करने वाला है। और इस तरह हम उन दोनों में एक ही चित्र का अलग-अलग फिल्म शॉट जैसा प्राप्त कर रहे हैं, और हमें उसको पढ़ने में सक्षम होना है और न कि विरोधाभास को ढूंढना है, लेकिन मुझे लगता है कि हम वास्तव में पूरक और संवर्धन होते हुए देख रहे हैं।
>
> — डॉ. मार्क सॉसी

सृष्टि की पहली कहानी, अर्थात उत्पत्ति 1:2 में, हमें बताया गया है कि सृष्टि मूल रूप से "बेडौल और सुनसान" पड़ी थी। फिर, बाकी के अध्याय में, हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को बनाने और भरने में छह दिनों का समय व्यतीत किया।

पहले तीन दिनों के दौरान, उसने इस तथ्य को सामने रखते हुए कि वह बेडौल पड़ी थी, उसके विभिन्न क्षेत्रों को आकार देने का कार्य किया। पहले दिन, उसने अंधकार को ज्योति से अलग किया। दूसरे दिन, उसने ऊपर के जल और नीचे के जल को अलग करने के लिए आकाश और वायुमंडल को बनाया। तीसरे दिन, उसने सूखी भूमि को समुद्र से अलग किया।

अगले तीन दिनों के दौरान, उसने इस तथ्य के साथ कार्य किया कि सृष्टि सुनसान पड़ी थी। चौथे दिन, उसने उजाले और अँधियारे को खगोलीय पिंडो से भरा, जैसे सूर्य और तारे। पाँचवें दिन, वह आकाश में पक्षियों को और समुद्रों में समुद्री जीवों को रखता है। छठवें दिन, उसने सूखी भूमि को सब प्रकार के जानवरों से भरा। और उसने अपनी ओर से संपूर्ण सृष्टि पर शासन करने के लिए मनुष्यों को बनाया। जैसा कि हम उत्पत्ति 1:27-28 में पढ़ते हैं:

> परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:27-28)।

बाइबल की कहानी के इस बिन्दु पर गौर करें तो पायेंगे कि, मानवता बाकी सृष्टि से स्पष्ट रूप से भिन्न थी। मनुष्यों को परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया और उसको अन्य जीवों के ऊपर अधिकार दिया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

गया था। इस पर हम और गहराई से बाद में बात करेंगे। इसलिए अब तक के लिए, हम सिर्फ यह बताना चाहते हैं कि मानवता न केवल सृष्टि का *हिस्सा थी;* वह उसका परमोत्कर्ष भी था।

उत्पत्ति 2:4-25 में, सृष्टि की दूसरी कहानी में छठवें दिन पर परमेश्वर के कार्य से संबंधित और विवरण शामिल हैं, जब उसने भूमि के जानवरों और मानवता को रचा। यहाँ पर, हमें बताया गया है कि पृथ्वी की मिट्टी को ढाल कर परमेश्वर ने जानवरों को बनाया। और उसने पहले मनुष्य, आदम, को बहुत कुछ उसी रीति से, उसके शरीर को भी पृथ्वी की मिट्टी लेकर बनाया। लेकिन यह ध्यान देना दिलचस्प है कि केवल आदम के लिए कहा गया कि परमेश्वर द्वारा उसके नथनों में श्वास फूंका गया और तब उसने अपनी श्वास को प्राप्त किया था।

फिर, जानवरों को आदम के सामने लाया गया, ताकि वह एक उपयुक्त सहायक खोजने की कोशिश कर सके — एक ऐसा जन जो उन कार्यों में उसकी मदद करेगा जिन्हें परमेश्वर ने उसे सौंपे थे। इस प्रक्रिया के दौरान, उसने जानवरों के नाम रखे, जिससे से जानवरों पर उसके अधिकार की पुष्टि हुई। आश्चर्य की बात नहीं, कि उनमें से कोई भी एक उपयुक्त सहायक नहीं निकला।

इसलिए, आदम को एक सहायक देने के लिए जिसकी उसे जरूरत थी, परमेश्वर ने आदम की पत्नी बनने वाली पहली महिला, हव्वा की रचना की। लेकिन उसको पृथ्वी की मिट्टी में से रचने के विपरीत, परमेश्वर ने हव्वा को आदम की पसली से बनाया। इस बात ने हव्वा को भी उन सभी जीवों के बीच अद्वितीय बना दिया जिन्हें परमेश्वर ने बनाया था। जैसा कि आदम ने उत्पत्ति 2:23 में कहा:

> इसका नाम “नारी” होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है (उत्पत्ति 2:23)।

नाम रखने के इस कार्य ने उसकी पत्नी के ऊपर आदम के अधिकार को दिखाया। लेकिन जो नाम उसने उसे दिया — इब्रानी में *ईशशाह,* जिसका अनुवाद हम “नारी” करते हैं सुनने में आदम के अपने नाम के जैसा लगता है — *ईश,* जिसका अनुवाद हम “नर” करते हैं।

इन नामों की समानता यह बताती है कि भले ही उनकी शादी में हव्वा आदम के आधीन थी, फिर भी वह उन कार्यों में उसके बराबर थी जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें एक जाति के रूप में सौंपा था। दोनों ही परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए थे। दोनों को पृथ्वी को भरना और उसे वश में करना था। और दोनों को परमेश्वर की ओर से सृष्टि पर शासन करने का अधिकार दिया गया था।

बाइबल में दर्ज मनुष्यों की सृष्टि की इन कहानियों को ध्यान में रखते हुए, आइए आदम और हव्वा, की ऐतिहासिकता, या ऐतिहासिक प्रमाणिकता की ओर मुड़ते हैं।

ऐतिहासिकता

हाल के वर्षों में, कई धर्मविज्ञानियों ने मनुष्य की सृष्टि की बाइबल की कहानियों को तथ्यात्मक इतिहास के बजाय, रूपकों या दृष्टान्त-कथाओं के रूप में देखा है। लेकिन स्वयं पवित्र शास्त्र का बहुत ही अलग दृष्टिकोण है। बाइबल में कई अन्य अध्यायों और पदों के अनुसार, आदम और हव्वा वास्तविक लोग थे। अपनी सृष्टि के समय, इस ग्रह पर केवल वे ही मनुष्य थे। लेकिन उन्होंने वास्तविक बच्चों को पैदा किया जो अंततः मानव जाति के रूप में बहुत बड़ गए जैसा कि आज हम इसे जानते हैं।

> बेशक आदम और हव्वा ऐतिहासिक लोग थे। बाइबल ने इसको ऐसे ही लिखा है, और हम बाइबल में विश्वास करते हैं क्योंकि यह परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है। जब हम इस संसार और इतिहास को समझते हैं, हम पुरातत्व, ऐतिहासिक दस्तावेजों, और विभिन्न परंपराओं द्वारा पारित किए गए सभी प्रकार की कहानियों का प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन सबसे मजबूत आधार जिस पर हम आदम और हव्वा को

> ऐतिहासिक मनुष्य साबित करते हैं वह यह हैं कि हम उस पर विश्वास करते हैं जिसे बाइबल ने हमें बताया है।
>
> — रेव्ह. ज़िआओजुन फैंग, अनुवादित

आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को दिखाने के वास्ते, हम बाइबल द्वारा दी गयी गवाही के तीन पहलूओं पर गौर करेंगे। सबसे पहले, हम स्वयं उत्पत्ति के व्यापक संदर्भ पर गौर करेंगे। दूसरा, हम उत्पत्ति से हटकर पुराने नियम की पुस्तकों की जाँच करेंगे। और तीसरा, हम नए नियम को देखेंगे। आइए स्वयं उत्पत्ति के व्यापक संदर्भ के साथ शुरू करते हैं।

उत्पत्ति

उत्पत्ति 2–4 में आदम और उसके निकटतम परिवार का अभिलेख वास्तविक इतिहास का वर्णन करने के अभिप्राय से ही एक कहानी के रूप में नज़र आता है। कुछ साहित्यिक शैलियाँ अत्यधिक आलंकारिक एवं रूपक होते हैं, जैसे कविता और दृष्टांत। अन्य बहुत ही सरल होती हैं जैसे कि ऐतिहासिक कहानियाँ। उत्पत्ति की अधिकांश पुस्तक निर्विवादित रूप से ऐतिहासिक कहानी है, जैसे कि 11–37 अध्यायों में पाए जाने वाले आरंभिक कुलपिताओं का इतिहास, और 37–50 अध्यायों में पाया जाने वाला बाद में आए कुलपिताओं का इतिहास, जैसे यूसुफ। और उत्पत्ति 2–4 का साहित्य इन दूसरे अनुच्छेदों से बहुत करीबी से मेल खाता है। वास्तव में, उत्पत्ति 2 को भी उसी साहित्यिक संकेतकों द्वारा पेश किया गया है जो कि पूरी पुस्तक में कई अन्य ऐतिहासिक कहानियों को पेश करता है। उस सूत्र वाले वचनों को सुनिए जिसे मूसा ने उत्पत्ति 2:4 में लिखा:

> आकाश और पृथ्वी का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए (उत्पत्ति 2:4)।

यह वाक्यांश "वृत्तान्त यह है" — जो इब्रानी में *एलेह टोलेडोथ,* है — इसका शाब्दिक "वंशावली यह है जैसा अनुवाद हो सकता है" ठीक यही वाक्यांश पूरी उत्पत्ति में मानव वंशावलियों की सूचियों एवं कहानियों का परिचय देने हेतु इस्तेमाल किया गया है। यह 5:1 में आदम की, 6:9 में नूह की, 11:10 में शेम की, 11:27 में तेरह की, 25:12 में इश्माइल की, 25:19 में इस़हाक की, 36:1, 9 में ऐसाव की; और 37:2 में याकूब की वंशवालियों का परिचय देता है।

इसके अलावा, उत्पत्ति आदम के जीवन के बारे में विवरण देता है। उदाहरण के लिए, हमें बताया गया है कि हव्वा गर्भवती हुई और हमें उनके बच्चों में से तीन के नाम बताए गए हैं। कैन, हाबिल और शेत। हमें यह भी बताया गया कि आदम कितने समय तक जीवित रहा, कि वह 130 वर्ष का था जब शेत पैदा हुआ था, और जब वह 930 का था तब उसकी मृत्यु हो गई। यह जीवन काल आज के मनुष्यों के जीवन की तुलना में बहुत लंबा है, लेकिन यह फिर भी स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक आँकड़ों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इसलिए, इन अध्यायों की कहानी के साहित्यिक ढाँचे, वंशावली सूत्र जिसका द्वारा उनका परिचय हमें मिलता है, और आदम के जीवन से जुड़े विवरणों के, प्रकाश में हम लोग निश्चित हो सकते हैं कि मूसा का अभिप्राय यही था कि उत्पत्ति 2–4 को इतिहास के रूप में पढ़ा जाए। दूसरे शब्दों में, वह चाहता था कि उसके पाठक विश्वास करें कि आदम और हव्वा वास्तविक, ऐतिहासिक लोग थे।

अब जबकि हमने उत्पत्ति में आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को देख लिया है, आइए अपना ध्यान पुराने नियम की अन्य पुस्तकों की ओर मोड़ें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुराना नियम

पुराने नियम में किसी और जगह पर हव्वा के नाम का उल्लेख नहीं है। लेकिन आदम को दो बार उल्लेख किया गया है। और दोनों ही स्थानों में, उसे एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 1 इतिहास 1:1 में शुरू होने वाली वंशावली उसे शेत के ऐतिहासिक पिता के रूप में सूचीबद्ध करती है। यह वंशावली आदम से लेकर इस्राएल और यहूदा के बाबुल की बंधुआई से लौटने के बाद की पीढ़ियों को दर्शाते हैं, जो कि ईसा पूर्व छठी सदी के अंत के आसपास थी। और लौटने वाले बंधुआईयों के लिए, यह ऐतिहासिक वंशावली महत्वपूर्ण और सटीक थी क्योंकि इसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में उनकी उचित भूमिकाओं और विरासत को स्थापित करने में उनकी मदद की। मिथक पर आधारित वंशावली इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाती, और इसलिए, यह इतिहास के लेखक के मूल श्रोताओं के लिए प्रेरक नहीं होती।

आदम का दूसरा उल्लेख होशे में प्रकट होता है। यह पद इस्राएल के ऐतिहासिक लोगों के पापों की तुलना आदम के पाप से करता है। होशे 6:7 को सुनिए:

> परन्तु उन लोगों ने आदम के समान वाचा को तोड़ दिया—उन्होंने वहाँ मुझसे विश्वासघात किया है (होशे 6:7)।

कुछ व्याख्याकार विश्वास करते हैं कि यह संदर्भ यहोशू 3:16 में उल्लिखित आदम नाम के नगर के लिए है। लेकिन उस नगर के पाप करने का यहोशू में ऐसा कोई संदर्भ नही है। इसलिए, होशे में इसे एक पर्याय के रूप में इस्तेमाल किया जाना अजीब होगा — विशेषकर तब जब हमारे पहले पिता का पाप इतना प्रसिद्ध था और मानवता के लिए इसके परिणाम इतने भयानक थे। अन्य लोग सुझाव दे सकते हैं कि इस तुलना के उपयोगी साबित होने के लिए आदम का ऐतिहासिक व्यक्तित्व होना जरूरी नहीं है। लेकिन जैसा कि हम नए नियम में देखेंगे, आदम के साथ वाचा तभी सार्थक है यदि वह ऐतिहासिक थी।

अब जबकि हमने उत्पत्ति में आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को उत्पत्ति और बाकी के पुराने नियम में देख लिया है, आइए अपना ध्यान नए नियम की ओर मोड़ते हैं।

नया नियम

नया नियम आदम के बारे में कई बार बोलता है, और नए नियम के लेखक बार-बार उसके इतिहास को ईश्वरीय-ज्ञान के महत्व से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों 5:12-21 में, पौलुस ने जोर दिया कि आदम के पाप के कारण मनुष्य मरता है। इसके अलावा, उसने सिखाया कि यीशु अपने विश्वासी जन को उस अभिशाप से बचाता है जो आदम के कारण हम पर पड़ा था। इसी प्रकार के वक्तव्य हम 1 कुरिन्थियों 15:22, 45 में भी देख सकते हैं। इसलिए, यदि आदम ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं था, तो फिर यीशु हमें किस चीज़ से बचाता है? यदि परमेश्वर के खिलाफ पाप करने के लिए कोई ऐतिहासिक आदम मौजूद नहीं था, तो फिर क्रूस पर मरने के लिए हमें किसी ऐतिहासिक यीशु की जरूरत नहीं पड़ती।

पौलुस ने आदम की ऐतिहासिकता को 1 तिमुथियुस 2:13, 14 में भी प्रमाणित किया जहाँ वह कहता है कि आदम को हव्वा से पहले रचा गया, और आदम से पहले हव्वा ने पाप किया। इसी रीति से, यहूदा 14 आदम की वंशावलियों को भरोसेमंद मानता है जब वह हनोक को आदम की सातवीं पीढ़ी के रूप में गिनता है। और वास्तव में, पुराने या नए नियम में ऐसा कोई भी एक स्थान नहीं है जो सूझाव देता हो कि आदम एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तित्व *नहीं था।*

> मैं सोचता हूँ कि आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को नकारना उस कार्य के लिए जिसमें हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह करने आया था ,एक बहुत बड़ा निहितार्थ है। इसलिए, यदि आदम और हव्वा सिर्फ मिथक या गढ़ी गई कहानी थे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> — तो कोई वास्तविक ऐतिहासिक आदम और हव्वा नहीं थे — यह परमेश्वर की मूर्खता ही लगती कि वह ऐसे मिथक के लिए आता और मरता जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं था, और मै सोचता हूँ, भूलचूक से, ऐसा कह कर हम यीशु मसीह की ऐतिहासिकता को भी झूठला रहे है, क्योंकि जब आप प्रेरित पौलुस को पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए, वह हमेशा इस रूपक का उपयोग करना पसंद करता है कि आदम में सभी मरते हैं, लेकिन नया आदम, जो कि यीशु मसीह है, हमें जीवन देता है। इसलिए, यदि आदम वास्तव में अस्तित्व में नहीं था, तो क्या मुझे नए आदम पर भरोसा करना चाहिए?
>
> — रेव्ह. वूयानी सिन्दो

अब जबकि हमने बाइबल की कहानियों को सारांशित करके और आदम एवं हव्वा की ऐतिहासिकता का बचाव करके मनुष्यों की सृष्टि को देख लिया है, आइए अपने ध्यान को मानवता की श्रेष्ठता की ओर मोड़ते हैं।

श्रेष्ठता

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया, बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि आदम और हव्वा को परमेश्वर ने पृथ्वी पर पाए जाने वाले अन्य जीवों से श्रेष्ठ होने के लिए रचा गया था। इस बात के लिए इस तथ्य में संकेत हो सकते हैं कि उत्पत्ति 1:27 छठवें दिन पर मनुष्य की सृष्टि को जानवरों की सृष्टि से एक अलग कार्य के रूप में सूचीबद्ध करता है, एक प्रकार से सृष्टि के चरम बिन्दु के रूप में। और वास्तव में, मानवता की सृष्टि के बाद ही, उत्पत्ति 1:31, सृष्टि को सिर्फ "अच्छा" कहने से इसे "बहुत अच्छा" कहने के बयान में बदलती है। मानवता की श्रेष्ठता के संकेत उत्पत्ति 2:7 में भी हो सकते हैं जहाँ सिर्फ आदम को स्पष्ट रूप से कहा गया है कि परमेश्वर द्वारा उसमें श्वास फूँकने से उसे जीवन प्राप्त हुआ था।

लेकिन बाकी की सृष्टि के ऊपर आदम और हव्वा की श्रेष्ठता का वास्तविक प्रमाण इस तथ्य में पाया जाता है कि परमेश्वर ने उन्हें अपने स्वरूप में रचा और उसकी ओर से सृष्टि पर शासन करने के लिए उन्हें नियुक्त किया। उत्पत्ति 1:27-28 को एक बार फिर से सुनिए:

> परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:27-28)।

इसी विचार को उत्पत्ति 9:2 और भजन संहिता 8:6-8 जैसे स्थानों में भी प्रस्तुत किया गया है। परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की ताकि वह अपनी महिमा और गुणों को उनमें इस तरह से प्रकट करे जिनमें अन्य जीव नहीं कर सकते थे। बाद के पाठ में, हम परमेश्वर के स्वरूप की अवधारणा को बड़े विस्तार से देखेंगे। लेकिन अभी के लिए, यह कहना पर्याप्त होगा कि परमेश्वर के स्वरूप में होना परमेश्वर की तस्वीर के समान होना है। प्राचीन मध्य-पूर्व में, अपने नागरिकों को राजा की भलाई और महानता का स्मरण दिलाने हेतु राजा अपने राज्य के चारों ओर स्वयं के चित्र लगाते थे। इसी तरह से, मनुष्य परमेश्वर की समानता में है। हमारा अस्तित्व मात्र ही परमेश्वर की शक्ति और भलाई की ओर संकेत करता है। और,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

क्योंकि कोई भी पृथ्वी का जीव परमेश्वर के स्वरूप में नहीं है, इसलिए कोई भी अन्य जीव इतना आदर या इतनी अंतर्निहित गरिमा का वहन नहीं करता है।

इससे बड़कर, परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को हर एक प्राणी के ऊपर शासन करने के लिए नियुक्त किया जो उसने बनाए थे। इस तरह से, मानवता सिर्फ स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ नहीं है; हमें एक श्रेष्ठ भूमिका भी सौंपी गई है। पृथ्वी के ऊपर परमेश्वर के शासन का संचालन करना *हमारा* काम है। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि का प्रशासन हमें सौंपा है, न कि किसी जानवर को। और उत्पत्ति 2:20 में हम इस विचार की पुष्टि को देखते हैं, जहाँ आदम ने जानवरों को नाम देने के द्वारा उन पर अपने अधिकार का प्रयोग किया, और जहाँ कोई भी ऐसा जानवर नहीं मिला जो उसके नियत कार्य को पूरा करने में उसकी मदद कर सके।

बाद में, पवित्र शास्त्र भी वर्तमान समय पर हमें लगभग स्वर्गदूतों के स्तर पर, और भविष्य में स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ रख कर मनुष्य की श्रेष्ठता की पुष्टि करता है। जैसा कि हम भजन संहिता 8:5 में पढ़ते हैं:

> तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा कम ही बनाया है और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है (भजन संहिता 8:5)।

> भजन 8 के बारे में बड़ी बातों में से एक उस प्रकार की गूँज है जो उत्पत्ति 1:26-28 में हो रही है। एक ओर, बाइबल में कई बातें हैं जो हमें इस बारे में बताते हैं कि परमेश्वर कितना महान है, इस बारे में कि ब्रह्माण्ड कितना विशाल है, और ऐसे भी पद जो हमें बताते हैं कि ब्रह्माण्ड कटना विशाल है; आप ब्रह्माण्ड की तुलना में बहुत छोटे हैं। लेकिन, दोनों उत्पत्ति 1:26 एवं 28, और भजन 8, परमेश्वर के संसार में, मनुष्य को दिए गए विशेष पद के गौरव के बारे में हमें बताते हैं, वास्तव में परमेश्वर के ब्रह्माण्ड में, मनुष्य को परमेश्वर के सामान और उसके स्वरूप में रचे जाने का गौरव प्राप्त हैं,। अब, यह भाषा "उसके स्वरूप में रचे गए" विशेष रूप से भजन 8 में नहीं है, लेकिन वहाँ पर "परमेश्वर से थोड़ा कम" रचे जाने वाली भाषा है लेकिन साथ में "महिमा के मुकुट का सिर पर रखा जाना" भी है, और फिर निश्चित रूप से सृष्टि पर प्रभुत्व दिए जाने के बारे में है — प्रभुत्व अर्थात सृष्टि के अच्छे प्रबंधक के रूप में — यह वही है जिसे भजन 8 में दोहराया गया है। इसलिए, भजन 8 यह देखने में हमारी मदद करता है, या हमें याद दिलाता है कि, जब परमेश्वर ने हमें रचा था, तो उसने हमें बड़े महत्व एवं उद्देश्य के साथ रचा था।
>
> — विन्सेंट बेकोट, Ph.D.

दुर्भाग्य से, आज कई लोगों ने मनुष्य और जानवरों के बीच अंतर को नष्ट करने की कोशिश की है। उदाहरण के लिए, कई लोग विश्वास करते हैं कि मानव प्रजाति विकासवाद के अंतर्गत संयोग से उत्पन्न हुई है। उनके लिए, मनुष्य और जानवरों के बीच अंतर मुख्य रूप से ऐतिहासिक है जिसे डीएनए के कुछ अणुओं द्वारा समझाया गया है। और जबकि यह दृष्टिकोण अभी भी मानता है कि मानसिक रूप से मनुष्य जानवरों से बेहतर है, लेकिन यह परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारे पास मौजूद मौलिक गरिमा को नकारता है, और सृष्टि के यथोचित शासकों के रूप में हमारे अधिकार को नजरअंदाज करता है।

सुसमाचारीय लोगों ने इन दावों का कई अलग-अलग तरीकों से जवाब दिया है। स्पेक्ट्रम की एक छोर पर, हम में से कुछ लोग का मानना है कि परमेश्वर ने छह सौर दिनों में ब्रह्माण्ड की रचना की। और कई विश्वास करते हैं कि आदम और हव्वा को शायद कुछ छह हजार वर्ष पहले रचा गया होगा। स्पेक्ट्रम की दूसरी छोर पर, हम में कुछ का मानना है कि सृष्टि में अधिक समय लगा, और अगर ज्यादा नहीं तो आदम और हव्वा कई हजार वर्ष पहले रचे गए थे। लेकिन, इस बात पर ध्यान दिए बगैर कि हम किस

दृष्टिकोण को अपनाते हैं, हम सब को सहमत होना चाहिए कि मानवता को गरिमा और अधिकार दोनों में बाकी सृष्टि से श्रेष्ठ रचा गया था।

अब तक, हमारे अध्ययन ने, कि, शुरुआत में मानवता किस के समान थी, इस बारे में हमारे पहले माता-पिता की सृष्टि पर ध्यान-केंद्रित किया है। आइए अब अपने ध्यान को अपने व्यक्तित्व की संरचना की ओर बढ़ते हैं।

संरचना

जब हम अपनी "संरचना" की बात करते हैं, तो हमारे दिमाग में वे विभिन्न भाग हैं जो एक मनुष्य को बनाते हैं। पवित्र शास्त्र हमारे घटक भागों का वर्णन करने के लिए भाषा की एक विस्तृत विविधता का उपयोग करता है। यह हमारे शरीर, मांस, दिल, दिमाग, आत्मा, प्राण, और कई अन्य चीज़ों के बारे में बातें करता है। लेकिन सदियों से, धर्मविज्ञानियों ने आम तौर पर सहमति व्यक्त की है कि उन सभी भागों को दो चीज़ों के संदर्भ में सारांशित किया जा सकता है: एक भौतिक भाग, जिसे आमतौर पर हमारा "शरीर" कहा जाता है; और एक अभौतिक भाग, जिसे आमतौर पर हमारा "प्राण" या "आत्मा" कहा जाता है।

अधिकांश सुसमाचारीय धर्मविज्ञानी सहमत हैं कि मनुष्य भौतिक शरीर और अभौतिक आत्मा से मिलकर बनता है, और ये भाग एक व्यक्ति में एकीकृत होते हैं। लेकिन उस विविध शब्दावली के द्वारा जिसका उपयोग पवित्र शास्त्र हमारा वर्णन करने के लिए करता है इन बिन्दुओं पर आकर उसकी शिक्षाओं को जटिल कर देता है, विशेषकर जब वह हमारे अभौतिक प्राणों की बात करता है। फिर भी, जब बाइबल भौतिक और अभौतिक संदर्भ में हमारे मानवीय स्वभाव को सारांशित करती है, तो अकसर यह हमारे भौतिक भाग के लिए एक ही शब्द का, और दूसरा एक ही शब्द हमारे अभौतिक भाग के लिए प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 7:1 में, पौलुस ने लिखा:

> तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें (2 कुरिन्थियों 7:1)।

इस पद में, पौलुस ने संकेत दिया कि हमारा मानवीय स्वभाव दो भागों के संदर्भ में सारांशित किया जा सकता है: भौतिक शरीर और अभौतिक आत्मा। और हम इसी शब्द-विन्यास को पूरे पवित्र शास्त्र में पाते हैं, जिनमें शामिल है: रोमियों 8:10; 1 कुरिन्थियों 7:34; कुलुस्सियों 2:5; याकूब 2:26; और 1 पतरस 4:6।

> बाइबल सिखाती है कि मनुष्य भौतिक भाग जिसे शरीर कहते हैं और प्राण, आत्मा, मन, इस तरह के विभिन्न शब्दों जैसे नाम के अभौतिक भाग दोनों से मिलकर बना है। और मानव स्वभाव के ये दोनों भाग आवश्यक हैं और सृष्टि में हमारे शुरूआती स्वभाव का हिस्सा होंगे और अंततः पुनरुत्थान में हमारे स्वभाव का हिस्सा होंगे, इसलिए हम अंततः सिर्फ एक प्राणी या सिर्फ एक आत्मा नहीं बन जाते हैं। अंततः शरीर पुनर्जीवित होगा। इसलिए, ये दोनों मानव स्वभाव के भाग है जिनमें दोनों का वर्तमान और भविष्य वाला महत्व है।
>
> — डॉ. जॉन हैम्मेट

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस समझ के अनुरूप, मनुष्य की संरचना की हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम देखेंगे कि प्रत्येक मनुष्य के पास एक भौतिक शरीर होता है। और दूसरा, हम इस तथ्य को संबोधित करेंगे कि हमारे पास अभौतिक आत्मा भी है। आइए पहले हमारे भौतिक शरीर की ओर बढ़ते हैं।

भौतिक शरीर

हमारे मानव स्वभाव के भौतिक या शारीरिक पहलू को संदर्भित करने के लिए पवित्र शास्त्र कई शब्दों का प्रयोग करता है। सबसे अधिक बार, यह "शरीर" शब्द का उपयोग यह कहने के लिए करता है कि मनुष्य वास्तविक, भौतिक पदार्थ से बना है।

जैसा कि यीशु ने मत्ती 10:28 में हमारे मानवीय स्वभाव के बारे में कहा:

> **जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना। पर उस से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है (मत्ती 10:28)।**

इस पद में, हमारी आत्मा, या अभौतिक गुणों से अलग हमारे भौतिक गुणों को संदर्भित करने के लिए यीशु ने शरीर शब्द का उपयोग किया।

"शरीर" शब्द का उपयोग करने के अलावा, बाइबल हमारे भौतिक गुणों को कुलुस्सियों 1:24 जैसे स्थानों में "मांस" के रूप में भी बताती है; "मांस और लहू," 1 कुरिन्थियों 15:50 और इब्रानियों 2:14 में; और "मांस और हड्डी" उत्पत्ति 2:23 में। और शब्द "शक्ति" व्यवस्थाविवरण 6:5, और मरकुस 12:30 में हमारी भौतिक क्षमताओं को संदर्भित करता है।

जाहिर है, शरीर में कई अलग-अलग हिस्से होते हैं। कभी-कभी, शरीर को सामूहिक रूप से इसके भागों के योग के रूप में संदर्भित किया जाता है, जैसे कि रोमियों 7:23 में "अंगों" वाले शब्द के रूप में। लेकिन बाइबल कई अंगों की उनकी अपनी पहचान भी करती है जैसे हाथों, पैरों, आँखों, और इसी तरह से अन्य। अब जबकि पवित्र शास्त्र में उल्लिखित शरीर के हर एक अंग की लंबी सूची हम लोग तैयार कर सकते हैं, लेकिन यह कोई खास उद्देश्य को पूरा नहीं करेगी। पवित्र शास्त्र के मार्गदर्शन के पीछे चलते हुए, धर्मविज्ञानी इन अंगों में से प्रत्येक को बड़े पूरे के रूप में समझने में संतुष्ट हैं जिसे हम भौतिक शरीर के रूप में पहचानते हैं।

अब, यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारे भौतिक शरीर केवल अस्थायी नहीं हैं; वे हमारे अस्तित्व के आवश्यक पहलू, और हमारे मानव स्वभाव के महत्वपूर्ण भाग हैं। हमारे शरीर की शुरुआत तब होती है जब हमारा गर्भधारण होता है, और वे हमारे साथ हमारे सांसारिक जीवन भर बने रहते हैं। और भले ही हमारे भौतिक शरीर मृत्यु के समय हमारी अभौतिक आत्माओं से अलग हो जाते हैं, फिर भी वे हमारा हिस्सा बने रहते हैं। यह एक कारण है कि पवित्र शास्त्र अकसर मृतकों की बात करता है जैसे कि वे अपनी कब्रों में मौजूद हैं, और मृत शरीरों की उन्हीं लोगों के रूप में पहचान करता है जैसे कि वे जीवन में थे। हम यहोयादा के संबंध में इसको देखते हैं, जिसे 2 इतिहास 24:15, 16 में दाऊद के नगर में राजाओं के संग दफनाया गया था। और प्रेरितों के काम 13:36 में, पतरस ने दाऊद का अपने पित्रों के साथ दफन होने की बात कही। यीशु के मित्र लाजर के लिए भी यूहन्ना 11:17 में कहा गया कि वह व्यक्तिगत रूप से अपनी कब्र में था। और स्वयं यीशु के लिए भी प्रेरितों के काम 13:29, 30 में कहा गया कि वह अपने पुनरुत्थान से पहले कब्र में पड़ा था।

इसके अलावा, युग के अंत में सार्वजनिक पुनरुत्थान होगा जहाँ प्रत्येक उस व्यक्ति का शरीर जो कभी भी मरा हो परमेश्वर के न्याय का सामना करने के लिए जिलाया जाएगा। उस समय, हमारी आत्माओं

और शरीरों को फिर से मिलाया जाएगा, और वे फिर कभी अलग नहीं किए जाएंगे। छुड़ाए हुए लोग नए आकाश और नई पृथ्वी में नए जीवन के लिए उठेंगे। लेकिन दुष्ट लोग दण्ड और अनंत शारीरिक पीड़ा के लिए उठेंगे। यूहन्ना 5:28-29 में यीशु के वचनों को सुनिए:

> **वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे उसका [मनुष्य के पुत्र का] शब्द सुनकर निकल आएँगे — जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-29)।**

हमारे भौतिक शरीर की इस समझ को ध्यान में रखकर, आइए अपनी संरचना के दूसरे पहलू को संबोधित करते हैं: हमारी अभौतिक आत्मा।

अभौतिक आत्मा

जैसा कि शरीर के साथ था, हमारे मानव स्वभाव के अभौतिक पहलूओं को संदर्भित करने के लिए पवित्र शास्त्र विभिन्न शब्दों का प्रयोग करता है। एक सबसे आम शब्द है "प्राण," जो अकसर इब्रानी शब्द *नेफेश* या यूनानी शब्द *सुके* का अनुवाद करता है। ये शब्द सामान्य रीति से मानव के अभौतिक स्वभाव की पूर्णता की तरफ संकेत करते हैं, लेकिन कभी-कभी वे संपूर्ण मनुष्य को भी इशारा करते हैं जिसमें भौतिक शरीर शामिल है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 2:7 हमें बताता है कि जब परमेश्वर ने आदम में जीवन का श्वास फूँका, तो आदम "जीवित प्राणी," या *नेफेश* बन गया। इस घटना में, इसका अर्थ है कि वह जीवित, सांस लेने वाला मनुष्य बन गया। और यूहन्ना 15:13 में, हमारे शारीरिक जीवनों को संदर्भित करने के लिए यीशु ने *सुके* शब्द का प्रयोग किया जब उसने समझाया कि महान प्रेम इसमे हैं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण — *सुके* — दे।

हमारे अभौतिक भागों के लिए सबसे आम शब्दों में दूसरा है "आत्मा," जो आम तौर पर इब्रानी में *रूआख* या यूनानी शब्द *न्यूमा* का अनुवाद है। दोनों ही शब्द अकसर मानव स्वभाव के अभौतिक पहलू को संदर्भित करते हैं, और इस अर्थ में, वे प्राण के लिए शब्दों के साथ अपेक्षाकृत समानार्थी हैं। हालांकि, "आत्मा" भी कई अन्य चीज़ों का उल्लेख कर सकती है, जैसे कि "साँस," "हवा," या यहाँ तक कि एक अभिवृति या आचरण, जैसा कि 2 तिमुथियुस 1:7 में वाक्यांश "भय की आत्मा।

इन शब्दों के अलावा, पवित्र शास्त्र के पास हमारे अभौतिक अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं के लिए कई शब्द हैं। उदाहरण के लिए, "बुद्धि" आमतौर पर हमारे नैतिक, बौद्धिक और तर्कसंगत विचारों की सीट की पहचान करता है, जैसा कि रोमियों 7:23 में। और "मन" कभी-कभी हमारे आंतरिक जीवन, या हमारे विचारों, इच्छा, अनुभूतियों और भावनाओं के अभौतिक स्रोत की पहचान करता है, जैसे कि 1 शमुएल 16:7, और 2 तिमुथियुस 2:22 में। यहाँ तक कि इब्रानी शब्द *मेएह* जिसका सामान्य रीति से आंत्र, गर्भ या आतंरिक अंगों के लिए अनुवाद होता है, भजन 40:8 जैसे स्थानों में हमारे अभौतिक अस्तित्व को संदर्भित करता है।

और बेशक, बाइबल में हमारे अभौतिक अस्तित्व के विभिन्न हिस्सों के लिए कई अन्य शब्द भी हैं, जिनमें हमारा विवेक, इच्छाएं, तर्क, विचार, बुद्धि, और भावनाओं की एक विस्तृत विविधता शामिल है। सामान्य तौर पर, जैसा कि हमारे शरीरों के साथ, धर्मविज्ञानियों ने इन सभी हिस्सों को बड़े पूरे से संबंधित के रूप में समझा है जिनकी पहचान हम अपने अभौतिक प्राण या आत्मा के रूप में करते हैं।

> **हमारे पास बाइबल में इस बात का वर्णन है कि कैसे मनुष्य को प्राण और बुद्धि और एक मन और आत्मा के साथ वर्णित किया गया है, और इनमें से कुछ शब्द पर्यायवाची हैं, वे परस्पर व्यापन हैं, लेकिन उनके अलग-अलग कार्य हैं। इस**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> तरह, दिल आत्मिक केंद्र और व्यक्ति के केंद्र का एक रूपक है। बुद्धि मन का हिस्सा हो सकता है, वैसे ही इच्छा भी मन का हिस्सा हो सकता है, भावनाएं मन में हैं। इस तरह, मन सोचता है, मन चुनाव करता है, मन विश्वास करता है, मन महसूस करता है। आत्मा और प्राण भी कुछ-कुछ परस्पर व्यापन हैं। इस तरह, मन आत्मा के केंद्र और प्राण के केंद्र के समान होगा, लेकिन आत्मा और प्राण के बीच काफी अंतर्बदल वाला उपयोग नहीं है। वे समान हैं। मेरी जितनी समझ है उसके अनुसार "आत्मा" को मनुष्य के अभौतिक भाग के लिए उपयोग किया गया हैं; और फिर स्वर्गदूत आत्माएं हैं, परमेश्वर आत्मा है। इस तरह यह अ-भौतिक सत्व है। "प्राण" का उपयोग आत्मा और शरीर सहित पूरे अस्तित्व को प्रकट करने के लिए किया जाता है। और इसलिए, जब किसी की मृत्यु हो जाती है, तब भी उन्हें प्राणी कहा जा सकता है, लेकिन आमतौर पर उन्हें मृत्यु के बाद आत्मा नहीं कहा जाता है। इसलिए, यह एक परस्पर व्यापन उपयोग है। मैं नहीं सोचता कि यहाँ हमें यह संकेत दिया जा रहा है कि आत्मा एक हिस्सा है और प्राण दूसरा हिस्सा है। यह एक ही गहन आत्मिक वास्तविकता के बारे में बात करने के बस अलग-अलग तरीके हैं जो एक मनुष्य है, और सार यह है कि हम सिर्फ शरीर नहीं है पर उससे बहुत ज्यादा हैं और यहाँ जटिलता है चाहे भले ही यह आत्मिक, अदृश्य, अ-भौतिक प्रकार की चीज़ है। इसलिए, यह थोड़ा जटिल है।
>
> — डॉ. जॉन मैककिनले

हमारे अभौतिक प्राण के लिए बुनियादी परिचय को ध्यान में रखने के साथ, तीन संबंधित विचार हैं जो बारीकी से ध्यान देने योग्य हैं: हमारे प्राणों की उत्पत्ति, हमारी आत्मा की अमरता, और हमारे अभौतिक संरचना का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण जिसे "त्रिभाजन" कहते हैं। आइए प्राण की उत्पत्ति के साथ शुरू करते हैं।

उत्पत्ति

मानव प्राण की उत्पत्ति के संबंध में कई विचार हैं। कुछ धर्मविज्ञानी — जो "सृष्टिवादी" कहलाते हैं — ऐसा मानते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य के लिए एक प्राण को तब रचता है जब व्यक्ति का गर्भ में धारण होता है। यह दृष्टिकोण जकर्याह 12:1 जैसे पदों से समर्थन प्राप्त करता है, जो कहता है कि परमेश्वर मनुष्य की आत्मा को उसके भीतर रचता है। सृष्टिवादी लोग यशायाह 42:5, और इब्रानियों 12:9 जैसे पदों का भी हवाला देते हैं, जो संकेत देते हैं कि परमेश्वर हमारी आत्माओं का रचयिता है।

अन्य धर्मविज्ञानी लोग, जिन्हें "जीवानुवंशिकतावादी" कहा जाता है, ऐसा मानते हैं कि मनुष्य अपनी आत्मा को सीधे अपने माता-पिता से प्राप्त करता है। इस दृष्टिकोण में, हमारे माता पिता की आत्माएं हमारी आत्माओं का ठीक उसी रीति से प्रजनन करते हैं जैसे उनके शरीर हमारे शरीरों का प्रजनन करते हैं। जीवानुवांशिकतावाद का उपयोग अकसर यह समझाने के लिए किया जाता है कि क्यों लोग पापमय आत्माओं के साथ पैदा होते हैं, क्योंकि यह समझाना मुश्किल है कि परमेश्वर क्यों ऐसी आत्मा को रचेगा जो पहले ही से पापी थी। जीवानुवांशिकतावादी लोग रोमियों 5:12 जैसे पदों पर विश्वास करते हैं, जो संकेत देते हैं कि हमने साधारण और प्राकृतिक पीढ़ी के माध्यम से अपने पापमयता को आदम से प्राप्त किया, और इब्रानियों 7:9, 10 सिखाता है कि लेवी अपने पूर्वज अब्राहम के शरीर में बीजावस्था में मौजूद था।

हम निश्चित हो सकते हैं कि हमारी आत्माएँ परमेश्वर की ओर से आती हैं। लेकिन ऐसा कैसे होता है यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है। इसलिए इन पाठों में, हम तर्क के दोनों ओर कोई दृढ़ पक्ष नहीं लेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> बहुत से लोग उम्मीद करते हैं कि बाइबल हमें हमारी आत्मा की उत्पत्ति, और यह कैसे आई और इसे कैसे बनाया गया इस बारे में बताएगी। बाइबल इन प्रश्नों को स्पष्ट नहीं करती, लेकिन यह हमें बताती है कि मनुष्य सिर्फ भौतिक शरीर ही नहीं है; उसके पास एक अभौतिक भाग भी है। मनुष्य के पास शरीर है, आत्मा है और प्राण है। बाइबल कहती है कि जब परमेश्वर ने मनुष्य को रचा, तो उसने उसमें श्वास फूँका और वह जीवित आत्मा बन गया। वह आत्मिक भाग है। बाइबल हमें नहीं बताती कि यह कैसे आई, लेकिन यह कि वह मौजूद है, और यह कि हमें उसकी देखभाल करने की जरूरत है। मनुष्य का यह भाग रोटी या सामान्य भौतिक वस्तुओं से तृप्त नहीं होता है। अगस्टीन ने इसे इस तरीके से समझाया: हमें भौतिक और आत्मिक दोनों जीवनों में तृप्त करने के लिए हमारे जीवन में यीशु के होने की आवश्यकता है।
>
> — डॉ. रियाड कासिस, अनुवादित

हमारी अभौतिक आत्मा की उत्पत्ति की बात करने के बाद, इसकी अमरता को संक्षेप में संबोधित करते हैं।

अमरता

बाइबल सिखाती है कि हमारे शरीरों के मरने के बाद भी हमारी आत्माओं का अस्तित्व बना रहता है। जबकि हमारे शरीर अपनी कब्रों में पड़े होते हैं, दुष्ट लोगों की आत्माएं नरक में अस्थायी दण्ड भोगते हैं, और विश्वासी लोग स्वर्ग में अस्थायी आशीषों का आनंद लेते हैं। यह उस समय होता है जिसे धर्मविज्ञानी "मध्यवर्ती अवस्था" कहते हैं, या अभी पृथ्वी पर हमारे जीवन और सार्वजनिक पुनरुत्थान के बीच का समय जब मसीह वापस आयेगा। जैसे कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:8 में कहा:

> हम...देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं (2 कुरिन्थियों 5:8)।

पौलुस का तर्क था कि हमारे मानवीय स्वभाव का अभौतिक पहलू मृत्यु से बच जाता है। और यदि हम विश्वासी हैं, तो हमारी आत्मा प्रभु के साथ रहने के लिए जाती है। पवित्र शास्त्र लूका 23:43; प्रेरितों के काम 7:59; फिलिपियों 1:23, 24; और प्रकाशितवाक्य में इसी रीति से बातें करता है।

कुछ-कुछ ऐसा ही अविश्वासी आत्माओं के लिए भी सच है। लेकिन स्वर्ग में प्रभु की उपस्थिति का आनंद लेने के बजाय, वे नरक में दुःख भोगते हैं। जैसा कि यीशु ने लूका 12:4-5 में सिखाया:

> जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते है, उनसे मत डरो...घात करने के बाद जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो (लूका 12:4-5)।

हालांकि नरक मृत्यु का स्थान है, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि पवित्र शास्त्र में मृत्यु ऐसी चीज़ नहीं है कि जिससे अस्तित्व समाप्त हो जाए। इसके विपरीत, यह परमेश्वर के दण्ड के आधीन आने का मामला है। इसलिए सजा और आशीष के दृष्टिकोण से, नरक में आत्माएं मर चुकी हैं। लेकिन अस्तित्व के दृष्टिकोण से, वे आत्माएं हमेशा के लिए जारी रहती हैं।

अस्थायी सजा और आशीष की मध्यवर्ती अवस्था के बाद, सार्वजनिक पुनरुत्थान में हमारी आत्माएं हमारे शरीरों के साथ फिर से मिल जाएगी। उस समय पर, हम अपने अंतिम स्थायी निवासों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जायेंगे। दुष्ट लोग शारीरिक एवं आत्मिक रूप से नरक में पीड़ा भोगेंगे। लेकिन विश्वासियों के रूप में, जब हमारे पुनर्जीवित शरीर हमारी अमर आत्माओं के साथ मिल जाते हैं, तो हम शारीरिक एवं आत्मिक रूप से मसीह के साथ नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में हमेशा के लिए रहेंगे।

अब जबकि हमने मनुष्य के अभौतिक आत्मा का उसकी उत्पत्ति और अमरता के संदर्भ में विचार कर लिया है, सो अब हमें त्रिभाजन के सिद्धांत का उल्लेख करना चाहिए।

त्रिभाजन

मसीह के लोगों के रूप में, हम जानते हैं कि मनुष्य सिर्फ भौतिक जीव नहीं है। आखिरकार, पवित्र शास्त्र हमारे अभौतिक आत्माओं के बारे में विस्तृत तरीकों से बात करता है। सुसमाचारीय धर्मविज्ञानियों और विद्धानों के बीच सबसे आम दृष्टिकोण वह है जिसका हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं, जिसे "द्विभाजन," या द्विपक्षीय दृष्टिकोण कहते हैं। यह वह सिद्धांत है जो कहता है कि मनुष्य दो मूलभूत भागों से बना है: शरीर और आत्मा।

फिर भी, सभी सुसमाचारीय धर्मविज्ञानी यह नहीं मानते हैं कि हमारी संरचना को एक भौतिक शरीर और एक अभौतिक आत्मा के संदर्भ में सबसे अचछी तरह से वर्णित किया जाता है। इसके बजाय कुछ धर्मविज्ञानी "त्रिभाजन" या त्रिपक्षीय दृष्टिकोण वाले सिद्धांत की पुष्टि करते हैं। यह दृष्टिकोण कहता है कि मनुष्य के तीन भाग होते हैं: शरीर, प्राण और आत्मा। त्रिभाजन मुख्य रूप से मानव प्राण और आत्मा के बीच अंतर करने वाले कुछ ही पदों के लिए अपील करता है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 4:12 कहता है:

> **परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल है। और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और प्राण और आत्मा को,... अलग करके आर पार छेदता है (इब्रानियों 4:12)।**

त्रिभाजन वालों का तर्क है कि यह पद प्राण और आत्मा को मनुष्य के अलग-अलग अभौतिक भागों के रूप में प्रस्तुत करता है। यही तर्क 1 कुरिन्थियों 15:44, और 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 से भी बनाए जाते हैं।

इस तरह के पदों के आधार पर, त्रिभाजन वालों का तर्क है कि आत्मा और प्राण एक ही चीज़ नहीं हैं। हमारे प्राण की पहचान आमतौर पर हमारे निचले अभौतिक कार्यों से होती है, जैसे कि जो हमारे शरीर का संचारण करते हैं और हमारी इच्छाओं एवं भूख को पैदा करते हैं। इसके विपरीत, हमारी आत्मा हमारे उच्च अभौतिक कार्यों से जुड़ी हुई हैं, जिनमें वे शामिल हैं जो हमें परमेश्वर से जोड़ते हैं।

लेकिन चाहे हम द्विभाजन या त्रिभाजन की पुष्टि करें, हमें स्वीकार करना चाहिए कि कई सुसमाचारीय लोग दूसरे दृष्टिकोण को अच्छे अंतरात्मा से मानते हैं। और हमें जोर देना चाहिए कि दोनों द्विभाजन और त्रिभाजन वाले सहमत हैं कि मनुष्य आंशिक रूप से भौतिक और आंशिक रूप से अभौतिक है।

> **मनुष्य के द्विपक्षीय और त्रिपक्षीय दृष्टिकोणों पर लंबे समय से चर्चा की गई है, और दोनों के पास कुछ भाष्यात्मक अधिकार हैं...इसलिए हम उस पर लड़ाई नहीं करेंगे, और यह प्रश्न इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि एक को धर्मसम्मत और दूसरे को धर्मविरोध के रूप में माना जाए।**
>
> **— डॉ. रमेश रिचर्ड**

हमारे अस्तित्व की संरचना हमें बताती है कि हमारे शरीर और हमारी आत्माएं दोनों महत्वपूर्ण हैं। कभी-कभी हम आत्मिकता पर इतने केंद्रित हो सकते हैं कि हम अपनी स्वयं की भौतिक जरूरतों की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

देखभाल करने में, या हमारे आसपास वालों की भौतिक जरूरतों के लिए विफल रहते हैं। या, ज्यादा बार, हम पृथ्वी पर भौतिक जीवन के महत्व पर जोर इस हद तक देते हैं कि हम अपने आत्मिक विकास पर उचित ध्यान देने में विफल हो जाते हैं। लेकिन शरीर-आत्मा वालों के रूप में हमारी संरचना दोनों के महत्व — और अंतर्संबंध — को पहचानने के लिए हमें प्रोत्साहित करती है। यदि हम वास्तव में आत्मिक दिमाग वाले हैं, तो फिर हम भौतिक संसार में अपने शरीरों के साथ परमेश्वर को आदर देंगे, और दूसरों की भौतिक ज़रूरतों की भी चिंता करेंगे। और यदि हम वास्तव में परमेश्वर की महिमा करने और उसके कार्य करने के लिए अपने शरीर का उपयोग करना चाहते हैं, तो यह हमारे दिलों और आत्माओं में आत्मिक विकास पैदा करेगा।

अभी तक, मनुष्य किस के समान था के अपने पाठ के आरम्भ में, हमने मानव की सृष्टि और अपने अस्तित्व की संरचना को देखा है। अब आइए अपने अंतिम प्रमुख विषय की ओर बढ़ते हैं: परमेश्वर के साथ मनुष्य का आरंभिक वाचा का संबंध।

वाचा

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को रचा, तो उसने उन्हें पृथ्वी पर यूँ ही स्वतंत्र और खुला नहीं छोड़ दिया। उसने उन्हें एक उद्देश्य के लिए रचा: अर्थात पृथ्वी पर अपने राज्य को स्थापित करने के लिए। उसने उन्हें योग्यताएं और कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान की। उनके निष्ठावान होने और लगन से कार्य करने की आवश्यकता के लिए उसने नियमों को निर्धारित किया। उसने उन्हें समझाया की अगर वे उसकी आज्ञा मानते हैं तो आशीषों को प्राप्त करेंगे, और यदि वे नहीं मानते हैं तो वे दण्ड भुगतेंगे। ईश्वरीय-ज्ञान के संदर्भ में, हम कह सकते हैं कि परमेश्वर ने अपने और मानवता के बीच वाचा के संबंध को स्थापित किया।

पुराने और नए नियमों के पूरे इतिहास के दौरान, परमेश्वर अपने लोगों के साथ औपचारिक संबंधों में जुड़ा। इन औपचारिक संबंधों की शर्तों को अकसर लिखा गया जिन्हें पवित्र शास्त्र “वाचा” कहता है, जिसका अनुवाद इब्रानी शब्द *बेरिथ* और यूनानी शब्द *डायथिके* से किया गया। ये वाचा से जुड़ेसंबंध प्राचीन अन्तराष्ट्रीय वाचाओं से मेल खाते हैं, विशेष रूप से महान सम्राटों या “अधिपति राजा” और दास राज्य के बीच संधियाँ थीं जो उनकी सेवा करते थे।

इन प्राचीन संधियों ने तीन विशेषताओं को साझा किया: अपने दास के प्रति अधिपति राजा का परोपकार, वफादारी जो अधिपति राजा अपने दास से चाहता था और वे परिणाम जो दास की वफादारी या विद्रोह का नतीजा होंगे। और ये संधियाँ, या वाचाएं, पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहते थे, ताकि दासों के वंशज अधिपति राजाओं के उत्तराधिकारियों की सेवा करते रहेंगे। इसी रीति से, परमेश्वर की वाचाएं उसके लोगों के प्रति उसकी परोपकारिता को रिकॉर्ड करती हैं, उसके लिए वफादारी की शर्तों को समझाते हैं, और उन शर्तों के प्रति वफादारी या विद्रोह के परिणामों का वर्णन करती हैं।

अब, मानवता की सृष्टि के रिकॉर्ड में, उत्पत्ति 1–3 में, इब्रानी *बेरिथ* शब्द का उपयोग नहीं करता है। और सेप्टुआजिन्ट भी, जो कि पुराने नियम का आरंभिक यूनानी अनुवाद है, *डायथिके* शब्द का उपयोग नहीं करता है। परिणामस्वरूप, कुछ धर्मविज्ञानी इस बात से इंकार करते हैं कि परमेश्वर और आदम के बीच का संबंध सही रूप में एक वाचा कहला सकता है। फिर भी, पवित्र शास्त्र दृढ़ता से बताता है कि परमेश्वर ने आदम के साथ एक वाचा बाँधी थी, और आदम के माध्यम से बाकी मानवता के साथ भी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

एक बात के लिए, आदम के साथ परमेश्वर के संबंध में वाचा के सभी सामान्य तत्त्व थे। परमेश्वर स्पष्ट रूप से आदम के ऊपर एक अधिपति, श्रेष्ठ राजा था। और जैसा कि हमने पहले उत्पत्ति 1:28 में देखा, परमेश्वर ने मानवता को अपने दास या दास राजाओं के रूप में नियुक्त किया और अपनी ओर से सृष्टि के ऊपर शासन करने का उन्हें निर्देश दिया।

इसके अतिरिक्त, आदम के साथ परमेश्वर के संबंध में परमेश्वर की परोपकारिता, आदम की वफादारी की शर्त, और आदम के आज्ञापालन या अनाज्ञाकारिता से जुड़े परिणाम शामिल थे। इन वाचा के तत्त्वों को हम और बारीकी से कुछ देर में देखेंगे। इसलिए, अभी के लिए हम सिर्फ इतना इंगित करेंगे कि इन तत्त्वों की उपस्थिति वाचा के संबंध के अस्तित्व को प्रदर्शित करती हैं।

एक और बात के लिए, आदम के साथ परमेश्वर का वाचा का संबंध बाद में उत्पत्ति में नूह की कहानी में माना जाता है। उत्पत्ति 6:18 में, परमेश्वर ने नूह से कहा:

> **तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ (उत्पत्ति 6:18)।**

यहाँ पर "बाँधता हूँ" इब्रानी क्रिया *कुम* का अनुवाद है। यह मौजूदा वाचा की पुष्टि के लिए एक सामान्य शब्द है। नई वाचा बनाने के लिए सामान्य क्रिया *कारत* है।

इसलिए, जब परमेश्वर ने कहा कि वह नूह के साथ अपनी वाचा "बाँधेगा," तो उसका अर्थ था कि वह नूह के साथ उस वाचा के संबंध की पुष्टि करेगा जो पहले ही से मौजूद थी। और आदम के साथ परमेश्वर का संबंध उत्पत्ति में एकमात्र संबंध है जो यहाँ देखने में प्रतीत होगा। इस व्याख्या की पुष्टि आदम की वाचा के लिए होशे के संदर्भ से होती है। आपको याद होगा कि होशे 6:7 कहता है:

> **परन्तु उन लोगों ने आदम के समान वाचा को तोड़ दिया—उन्होंने वहाँ मुझसे विश्वासघात किया है (होशे 6:7)।**

इसके अलावा, यिर्मयाह 33:20, 25 एक ऐसी वाचा का जिक्र करता है जो स्वयं सृष्टि को बाँधती है। यह वाचा सृष्टि के रचे जाने वाले सप्ताह के दौरान बनाई गई ही ऐसा प्रतीत होता है, और इसलिए यह स्वभाविक रूप से आदम और हव्वा को परमेश्वर के दासों के रूप में शामिल करेगी।

एक और सबूत कि परमेश्वर ने आदम के साथ वाचा बाँधी वह है कि आदम के साथ परमेश्वर का संबंध मसीह के साथ परमेश्वर के संबंध के समानांतर है। पौलुस ने इस बारे में विस्तार से रोमियों 5:12-19 में लिखा। और मसीह के साथ परमेश्वर का संबंध एक वाचा थी। यह तथ्य पूरे इब्रानियों 7–13 में बार-बार प्रगट होता है। और यीशु ने स्वयं इसका उल्लेख अंतिम भोज के समय किया था। लूका 22:20 में , यीशु ने अपने चेलों को बताया:

> **यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है (लूका 22:20)।**

बेशक, जैसा कि हमने पहले कहा था, मूसा ने आदम के साथ परमेश्वर के संबंध का वर्णन करने के लिए *बेरिथ* शब्द का उपयोग नहीं किया। लेकिन यह परवाह किए बिना कि हम इसे क्या कहते हैं, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर और आदम के बीच व्यवस्था ने एक वाचा की सभी विशेषताओं को साझा किया। और ऐतिहासिक रूप से, धर्मविज्ञानियों ने सहमति व्यक्त की है। उदाहरण के लिए, धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर और आदम के बीच संबंध को अकसर "आदम की वाचा" के रूप में संदर्भित किया, क्योंकि आदम अपने लोगों के ऊपर मुखिया था, और वाचा का पहला मानव प्रशासक। उन्होंने इसको "जीवन की वाचा" के रूप में भी संदर्भित किया, क्योंकि यदि आदम इसको नहीं तोड़ता तो इसका परिणाम अनंत जीवन होता। उन्होंने इसको "सृष्टि की वाचा" कहा है, क्योंकि इसको सृष्टि वाले सप्ताह के दौरान बनाया गया था और यह संपूर्ण रची गई व्यवस्था के लिए निहितार्थ रखता है। और उन्होंने इसको

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

"कार्यों की वाचा" कहा है, क्योंकि यह मानवता की आज्ञाकारिता के कार्यों की शर्त पर जीवन का वादा करती थी।

> "कार्यों की वाचा" उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों में उस प्रशासन को संदर्भित करती है जिसमें परमेश्वर आदम के पास आया और उत्पत्ति 2 में उसे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में से फल न खाने को कहा, क्योंकि जिस दिन वह उसमें से खायेगा वह अवश्य मर जायेगा। कार्यों की वाचा आदम के लिए जीवन और मृत्यु प्रस्तुत करती थी। यदि आदम ने परमेश्वर की अवज्ञा की तो परिणाम मृत्यु होगा। यदि आदम ने परमेश्वर की आज्ञा मानी होती, परमेश्वर की आज्ञापालन में बना रहता, जो उसने नहीं किया, तो परिणाम पुष्टीकृत जीवन होता। और आदम एक प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति था, जैसा कि रोमियों 5 और 1 कुरिन्थियों 15 में पौलुस सिखाता है। और उसका क्या अर्थ है कि जब आदम ने आज्ञा मानी या उसकी अवज्ञा की, और इस केस में अवज्ञा की, तो उसने अपनी भावी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में ऐसा किया, इसलिए कि जब उसने पाप किया और मृत्यु संसार में आई, तो उसका पाप उसके भावी पीढ़ी के लिए गिना गया और इस तरह मृत्यु भी उनके लिए आई।
>
> — डॉ. गाय वॉटर्स

आदम के साथ परमेश्वर की वाचा पर, हम पहले से उल्लिखित वाचाओं के तीन बुनियादी विशेषताओं के संदर्भ में विचार करेंगे। सबसे पहले, हम मानवता के प्रति परमेश्वर के दिव्य परोपकार को देखेंगे। दूसरा, मानवीय विश्वासयोग्यता की जाँच करेंगे जिसको परमेश्वर ने आदम एवं उसकी जाति से चाहा। और तीसरा, हम मानवता की आज्ञाकारिता एवं अवज्ञा के द्वारा आने वाले परिणामों पर विचार करेंगे। आइए परमेश्वर के दिव्य परोपकार के साथ शुरू करते हैं।

ईश्वरीय परोपकार

परमेश्वर का परोपकार वह भलाई एवं दयालुता है जो वह अपनी सृष्टि के प्रति व्यक्त करता है, उत्पत्ति 1, 2 में आदम और हव्वा के लिए किए गए भले कामों के जैसे। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने स्वरूप में रचा, बाकी सृष्टि के ऊपर अधिकार के पद पर उन्हें ऊँचा उठाया। दाऊद ने इस उदारता के बारे में भजन 8:4-6 के प्रसिद्ध वचनों में लिखा:

> तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा कम ही बनाया है और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पाँव तले सब कुछ कर दिया है (भजन 8:4-6)।

जब दाऊद ने पूछा, "मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे?" तो वह स्वीकार कर रहा था कि मानवता इस लायक नहीं है कि उस पर ध्यान दिया जाए, जो हम परमेश्वर से प्राप्त करते हैं। और दाऊद विशेष रीति से आदम और हव्वा, और उनके वंशजों को सृष्टि के ऊपर अधिकार देने के द्वारा परमेश्वर के उपकार से प्रभावित था।

आश्रय और जीविका प्रदान करने के द्वारा परमेश्वर ने दूसरे तरीके से मानवता के साथ अपनी प्रारंभिक वाचा में अपनी उदारता दया या परोपकार को व्यक्त किया। विशेष रूप से, जैसा कि हम उत्पत्ति

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

2:8 में पढ़ते हैं, उसने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में रहने की अनुमति दी, और उसने उनके लिए सभी भोजन की आपूर्ति भी की जिनकी उन्हें आवश्यकता थी। उत्पत्ति 1:29 में, परमेश्वर ने आदम से कहा:

> जितने बीजवाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं। वे तुम्हारे भोजन के लिए हैं (उत्पत्ति 1:29)।

आदम के पाप में गिरने के बाद परमेश्वर की वाचा और उससे जुडी उसकी दया अपने पूर्ण प्रदर्शन पर थी। उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने आदम को चेतावनी दी थी कि यदि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खा कर पाप करते हैं तो मानवता मर जाएगी। लेकिन जब उन्होंने उसे खाया, तो वे मरे नहीं — कम से कम शारीरिक रूप से तो नहीं। इसके विपरीत, परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाने का एक तरीका प्रदान किया, और उनका उद्धार करने के द्वारा अपने अनुग्रह को उँडेला। और उसने अपने लोगों पर पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए उस अनुग्रह को बनाये रखा, अर्थात हर उस एक जन के लिए जो पाप से पश्चाताप करता है और उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर देखता है।

> उत्पत्ति 1 और 2 में, परमेश्वर ने हर एक चीज़ मनुष्य जाति के लिए रची; न केवल आदम और हव्वा के लिए, लेकिन उनके सभी वंशजों लिए। [वास्तव में], पाप में गिरने के बाद, सभी मानव जाति ने उस प्रारंभिक सृष्टि का आनंद लेना जारी रखा है। जो और भी ज्यादा आश्चर्यजनक है कि जब [हमारे] प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर चले, तो जिन चीज़ों की उसने घोषणा की, उन पर प्रचार किया, और उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया वे उत्पत्ति 1 और 2 में [भी] हैं, [जैसे] जिन तारों को उसने [आकाश] में देखा उन्होंने उसकी आराधना करने में उन बुद्धिमान पुरुषों का मार्गदर्शन किया। और जब उसने खेतों में प्रचार किया, तो उसने विशेषकर चिड़ियों का उल्लेख किया जो न तो बोते हैं और न काटते हैं। ये सभी उत्कृष्ट प्रचार के दृष्टांत बने। यह हमें यह सोचने के लिए भी प्रेरित करता है कि भविष्य में जब प्रभु फिर से आयेगा, तो जो महिमामय ज्योति नए आकाश और नई पृथ्वी पर प्रगट होगी उसे पहले ही से उत्पत्ति में आश्चर्यजनक रूप से दर्ज किया गया था, [क्योंकि] शुरुआत में परमेश्वर ने उसको बनाया था। मेरा मानना है कि इस बहुत विशेष उद्देश्य को पूरा करना एक कारण था कि परमेश्वर ने इन चीज़ों को शुरुआत में बनाया।
>
> — रेव्ह. पीटर लियू, अनुवादित

परमेश्वर के ईश्वरीय परोपकार की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए मनुष्य की विश्वासयोग्यता की ओर बढ़ते हैं जो उसकी वाचा की एक महत्वपूर्ण शर्त है।

मनुष्य की विश्वासयोग्यता

मनुष्य की विश्वासयोग्यता की जो शर्त परमेश्वर ने ठहराई थी उसे दिखाने के लिए, धर्मविज्ञानियों ने अकसर उत्पत्ति 2:17 की ओर इशारा किया है, जहाँ परमेश्वर ने आदम को भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से न खाने की आज्ञा दी थी। और जबकि यह सच है कि यह उस विश्वासयोग्यता का हिस्सा था जिसे परमेश्वर मनुष्य से चाहता था, लेकिन उसकी आज्ञाएँ सिर्फ निषेध किये जाने से बहुत आगे जाती है।

धर्मविज्ञानियों के पास इस दायित्वों का वर्णन करने के विभिन्न तरीके हैं, लेकिन कई कहते हैं कि आदम ने परमेश्वर से संपूर्ण नैतिक व्यवस्था को प्राप्त किया, जिसे बाद में दस आज्ञाओं में सारांशित किया

गया था। उदाहरण के लिए, *वेस्टमिन्स्टर कनफैशन ऑफ फेथ,* जो 1647 में पूरा हुआ, वह अध्याय 19, भाग 1 और 2 में आदम के दायित्वों का वर्णन इस प्रकार करता है:

> परमेश्वर ने कार्यों की वाचा के रूप में, आदम को एक व्यवस्था दी, जिसके द्वारा उसने आदम और उसके सभी भावी पीढ़ी को व्यक्तिगत, संपूर्ण, सटीक और स्थायी आज्ञाकारिता के लिए बांध दिया...यह व्यवस्था, उसके पाप में गिरने के बाद भी धार्मिकता का एक सिद्ध पैमाना बना रहा; और, जैसा कि, दस आज्ञाओं में, सीनै पर्वत पर परमेश्वर द्वारा दिया गया था।

इस पाठ में, हम अपनी जाँच को दो प्रकार की मानवीय वफादारी तक सीमित रखेंगे जिन्हें परमेश्वर ने हमसे चाहा था। पहला, परमेश्वर ने आदम और हव्वा पर याजक के दायित्वों को सौंपा। और दूसरा, उसने उन्हें बाकी की सृष्टि के ऊपर शाही दायित्वों को सौंपा। आइए सबसे पहले मानवता के याजक वाले दायित्वों को देखते हैं।

याजक होने के दायित्व

अदन की वाटिका में आदम की याजक वाली भूमिका स्पष्ट है, दोनों, क्योंकि वाटिका एक पवित्र स्थान के रूप में कार्य करता था, और क्योंकि आदम और हव्वा ने याजकों का कार्य किया। एक पवित्र स्थान के रूप में, वाटिका मिलाप वाले तम्बू का और बाद में मंदिर का पूर्वगामी था। वास्तव में, मिलाप वाले तम्बू की साज-सज्जा और सजावट ने कई धर्मविज्ञानियों को इस निष्कर्ष पर पहुँचाया कि यह अदन की वाटिका की प्रतिकृति के रूप में था। मिलाप वाले तम्बू का दीवट वाटिका के जीवन के वृक्ष जैसा दिखता था। मिलाप वाले तम्बू के पर्दों और साक्षी के संदूक को सजाने वाले करूब ने उत्पत्ति 3:24 में अदन की वाटिका की रखवाली करने वाले करूब को याद दिलाया।

और जिस तरह से अदन की वाटिका मिलाप वाले तम्बू और मंदिर का पूर्वगामी था, आदम और हव्वा याजकों के पूर्वगामी थे जिन्होंने उन पवित्र इमारतों में सेवा की। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 3 में परमेश्वर आदम और हव्वा के साथ चला और उनसे बातें की। लैव्यवस्था 16 के अनुसार, परमेश्वर ने बाद में अपनी उपस्थिति केवल अपने महायाजक को दिखाई, और मिलाप वाले तम्बू और मंदिर के केवल परम पवित्र स्थान में। वाटिका में आदम को जो काम सौंपा गया था, वह भी उसके याजक वाले कार्य की ओर इशारा करता है, क्योंकि उनका वर्णन उसी तकनीकी भाषा में है जैसे मिलाप वाले तम्बू में याजकों के काम के रूप में है। उत्पत्ति 2:15 में हम पढ़ते हैं:

> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे (उत्पत्ति 2:15)।

इब्रानी शब्द *आवद,* जिसका अर्थ "काम करना" है, और *शामर,* यहाँ पर जिसका अनुवाद "रक्षा करना" है, दोनों बहुत आम शब्द हैं और कई चीज़ों का अर्थ हो सकते हैं। लेकिन एक साथ वे याजक वाले काम का वर्णन करते हुए एक तकनीकी वाक्यांश को बनाते है उदाहरण के लिए, हम गिनती 3:8 में पढ़ते हैं:

> [लेवी लोग] मिलाप वाले तम्बू के कुल सामान की और इस्राएलियों को सौंपी हुई वस्तुओं की भी रक्षा करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें (गिनती 3:8)।

> सृष्टि की कहानी में , आदम और हव्वा को परमेश्वर के स्वरूप में न केवल शासन और वश में करने के लिए, लेकिन प्रतिनिधित्व करने के लिए भी रचा गया। इस्राएल में याजक की भूमिका के सामान ही जैसा की उन्हें माना गया है — याजक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परमेश्वर और मानवजाति के बीच प्रतिनिधित्व या बीच में खड़े होने वाले, माध्यम थे — इस तरह आदम और हव्वा को ठीक यही काम करने के लिए बनाया गया है। उन्हें शासन करना, सेवा करना, आज्ञापालन करना और इस प्रकार पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करना है, जो सटीक वही बात है कि, जब आप कुलपिताओं से होकर जाते हैं, जब आप इस्राएल देश और तोरह से होकर जाते हैं, जब आप नए नियम और महान आदेश या गवाह बनने के लिए प्रेरितों के काम 1:8 में पवित्र आत्मा के हम पर उतरने में आते हैं, वह सब आदम और हव्वा के परमेश्वर के स्वरूप में होने और उसकी समानता में बनाये जाने में निहित है, लेकिन यह भी दिखाने के लिए कि वह किस के समान है, जो कि एक याजक की प्राथमिक भूमिका है।
>
> — प्रो. जैफरे ए.वोक्मर

आदम के साथ परमेश्वर की वाचा पूरी मानवता के लिए बाध्यकारी थी, और अभी भी है। इसलिए, इन याजकों के कर्तव्यों से निकलने वाले नैतिक दायित्वों को पूरा करने के लिए मानवता अभी भी परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर की सेवा और उसकी आराधना करने, सृष्टि को विकसित और रक्षा करने, और पूरे संसार को ऐसे पवित्र स्थान में बदलने के लिए हमें बुलाया गया है जो परमेश्वर की उपस्थिति के लिए उपयुक्त हो। और कलीसिया में, परमेश्वर ने हमें अतिरिक्त दायित्व दिए हैं, जैसे कि उसकी स्तुति और आज्ञाकारिता के बलिदान चढ़ाना, और संसार के लिए उसकी भलाई की घोषणा करना। जैसा कि 1 पतरस 2:5, 9 में पतरस ने कलीसिया को बताया:

> तुम...आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर ,ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओं...[तुम] एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो (1 पतरस 2:5, 9)

आदम और हव्वा के याजकीय दायित्वों के संदर्भ में मानवीय विश्वासयोग्यता का पता लगाने के बाद, आइए उनके शाही दायित्वों पर चर्चा करें।

शाही दायित्व

जैसा कि इस पाठ में हमने पहले देखा, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को सृष्टि के ऊपर अपनी ओर से शासन करने के लिए नियुक्त किया। और उसने उन्हें पूरी पृथ्वी पर अपना शासन फैलाने के लिए मानव जाति को बढ़ाने की आज्ञा दी। यह मानवता का शाही दायित्व था। उत्पत्ति 1:28 में मानवता के लिए परमेश्वर की आज्ञा को फिर से सुनिए:

> फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो (उत्पत्ति 1:28)।

> इसलिए उत्पत्ति 1 में “स्वरूप” और “समानता” जैसी इस्तेमाल की गयी भाषा का अर्थ समझने के सबसे सामान्य तरीकों में से एक तरीका ये है कि परमेश्वर ने हमें अपने प्रतिनिधि होने के लिए और सृष्टि में उसके शासकों के रूप में रहने के लिए रचा। और हम उस व्यापक सांस्कृतिक संदर्भ से देखते हैं जब मूसा लिख रहा था,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> जहाँ "स्वरूप" और "समानता" को अक्सर फिरौन और राजाओं का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया था, इसलिए ऐसा कहना कि फिरौन "देवता के स्वरूप" में बनाया गया है, यह कहना है कि उस विशेष संदर्भ में वह देवता का प्रतिनिधि शासक है...मैं सोचता हूँ कि यह ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है कि उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वाटिका में घास पर लेटने और बादल गिनने, पास की भेड़ों को देखने के लिए नहीं रखा था। ठीक है न? वह उन्हें वाटिका में कार्य और विशेष उद्देश्य को देता है, ठीक है न ? वाटिका की देखभाल और रक्षा करने के लिए उसने उन्हें वहाँ रखा, ताकि सृष्टि के साथ कार्य करने का यह उद्यम, सृष्टि की देखभाल करने और आकार देने और ढालने में वह मदद करे, ताकि वह उस तरह की सृष्टि बन जाए जैसा कि परमेश्वर इसे देखना चाहता है, वास्तव में, ऐसी जिसमें सारी सृष्टि फलती-फूलती है। मनुष्य के होने का क्या अर्थ है यह उसका हिस्सा है। परमेश्वर ने हमें ऐसे ही बनाया है कि हम इस सृष्टि में इस प्रतिनिधि के कार्य को पूरा करे जिसके लिए परमेश्वर ने हमें रखा है।
>
> — डॉ. मार्क कौर्टेज़

स्वर्ग के महान राजा ने अदन की वाटिका में उनके निवास की शुरूआती सीमाओं से पार अपने राज्य का विस्तार करने के लिए अपने शाही दासों के रूप में मानव को अभिषिक्त किया। उसका लक्ष्य उनके लिए यह था कि वे बहुत बढ़ें, बाहर फैलें, और पूरी पृथ्वी की देखभाल उसी रीति से करें जैसे कि वे वाटिका की देखभाल करते थे। अंततः, मानवता को परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य के विस्तार के रूप में पूरे ग्रह को परमेश्वर की पृथ्वी और एक पवित्र स्थान में बदलना था। और यह आज भी हमारा दायित्व है। मत्ती 6:10 में, प्रभु की प्रार्थना में, यीशु ने हमें यह प्रार्थना करना सिखाया:

> तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:10)।

यह हमेशा से मानवता का कार्य रहा है कि परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य को पृथ्वी पर विस्तारित करने में उसकी मदद करें। हमारी प्रार्थनाओं के लिए यीशु के निर्देश यह दर्शाते हैं। और इस कार्य को करने की जिम्मेदारी विशेष रूप से कलीसिया में उसके वफादार लोगों पर है। हमें अपने प्रत्येक व्यवसाय को उस प्रभुत्व के पहलूओं के रूप में देखना चाहिए जिसे परमेश्वर ने हमें पृथ्वी पर दिया है। और हमें अपने कौशलों एवं अपने संसाधनों का उपयोग उसकी सृष्टि की देखभाल और शासन करने के लिए करना चाहिए। चाहे हम अपने घरों में हों, अपनी नौकरियों पर, कलीसिया में, या कहीं भी हों, हमारी बुलाहट उस हर काम में है जो हम करते हैं अर्थात अपने महान राजा का प्रतिनिधित्व और उसकी सेवा करना।

अब जबकि हमने आदम के साथ परमेश्वर की वाचा में उसके ईश्वरीय परोपकार को, और मानव से विश्वासयोग्यता की शर्त को देख लिया है, आइए मानवता की आज्ञाकारिता और अवज्ञा के परिणामों पर गौर करते हैं।

परिणाम

आदम के साथ परमेश्वर की वाचा ने मानवता के लिए आशीषों की प्रतिज्ञा की यदि उन्होंने उसे वफादारी दिखाई, और श्राप यदि वे अनाज्ञाकारी ठहरते हैं। और जैसा कि हमने उल्लेख किया, अवज्ञा का परिणाम मृत्यु था। उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने आदम से कहा:

> पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17)।

अब प्राचीन इब्रानी कानूनी ग्रंथों ने आमतौर पर अनिवार्य दण्ड जिसे लागू *किया जाना था* उसकी बजाय उस अधिकतम दण्ड को बताया जो दिया *जा सकता था।* लेकिन चाहे उत्पत्ति 2:17 में परमेश्वर के वचनों का अर्थ अवज्ञा के लिए अधिकतम दण्ड या अनिवार्य दण्ड था, परमेश्वर की वाचा के प्रति मनुष्य की अनाज्ञाकारिता के गंभीर परिणाम थे। स्पष्ट रूप से, हमारे पहले माता-पिता मृत्यु के योग्य थे।

आदम और हव्वा के पाप का एक परिणाम यह था कि वे परमेश्वर के दण्ड के नीचे आ गए, उस प्रकार की न्यायिक मृत्यु को सहना जिसका उल्लेख हमने पहले किया था। और रोमियों 8:10 में आत्मिक जीवन और मृत्यु के बारे में पौलुस की शिक्षा संकेत देती है कि वे आत्मिक रूप से मर गए, और उसी भाग्य के लिए उन्होंने अपने सभी स्वाभाविक वंशजों को अपराधी ठहराया। इसके अलावा, जैसा कि हम उत्पत्ति 3:22-24 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने उन्हें अदन की वाटिका में अपनी उपस्थिति से बाहर निकाल दिया। और उन्होंने अपने पाप के कारण. स्वयं सृष्टि को भी विनाश के दासत्व के अधीन किया गया।

> आदम के पाप का प्रभाव क्या था, मूल रूप से बुराई के दरवाजे को खोलना। उनके पाप ने बुराई को संसार में प्रवेश कराया, और उसके परिणामस्वरूप, सब कुछ बुराई से संक्रमित हैं, सब कुछ बुराई से बिगड़ गई है, और विशेष रूप से परमेश्वर के उद्देश्य बुराई के द्वारा पटरी से उतर गए हैं। इस तरह, यह पूरी मानवता को, हमारे शरीरों को, और हमारे दिमागों को प्रभावित करता है। यह सृष्टि की बनावट को ही प्रभावित करता है, जिससे कि यह, जैसा कि रोमियों 8 कहता है, व्यर्थता के अधीन है, और अपने स्वयं के फिर से बनाए जाने के लिए तरस रहा है। और निश्चित रूप से, संबंधों के रूप में, यह मनुष्यों के समान एक दूसरे के साथ, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों को प्रभावित करता है...और इस तरह, बुराई ऐसी समस्या बन जाती है, जिसका समाधान करने की जरूरत है। और जबकि अवज्ञा के सिर्फ एक कार्य ने बुराई का दरवाजा खोला, यह कुछ-कुछ एक अंडे को फोड़ने के समान है। बुराई को कम करके आंकना बड़ा जोखिम का काम है, जो बनाए गई व्यवस्था के भीतर इतनी गहराई से पैठ गया है। यही कारण है कि आदम और हव्वा के पाप का कार्य बाइबल की कुछ ही पंक्तियों में लिखा है, लेकिन इसे उलटने का कार्य हजार पृष्ठों से ज्यादा का स्थान लेता है।
>
> — डॉ. टिम फॉस्टर

मानवता के पाप के सभी भयानक परिणामों के बावजूद, परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को एकदम से नहीं मार दिया; उसने उन्हें शारीरिक रूप से जीवित छोड़ दिया। और इससे भी अधिक, पाप की उनकी नई दशा में परमेश्वर ने उन के लिए परोपकारिता दिखाई। मिसाल के तौर पर, जैसा कि उसकी धारणा से स्पष्ट है, कि वे अपने बच्चों को विश्वास में पालेंगे, और उत्पत्ति 4:1, 25 में हव्वा के विश्वास की अभिव्यक्ति से, कि उसने उन्हें आत्मिक जीवन के लिए पुनः स्थापित किया। इससे ऊपर, उन्हें उनके पाप के सभी परिणामों से बचाने के लिए परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता भेजने की प्रतिज्ञा की। यह प्रतिज्ञा सर्प के खिलाफ परमेश्वर के श्राप में प्रकट होती है, जिसने हव्वा को मना किये गए फल खाने के लिए प्रेरित कर धोखा दिया था। उत्पत्ति 3:15 में सर्प के लिए परमेश्वर के वचनों को सुनिए:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> **मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।**

वह उद्धारकर्ता अंततः मसीह होगा, जो वाचा को सिद्धता के साथ पूरा करेगा, परमेश्वर की वाचा के द्वारा आने वाली आशीषों को प्राप्त करेगा, और अनुग्रहकारी होकर अपनी आशीषों को उन लोगों के साथ साझा करेगा जिनका उसने उद्धार किया है।

अब उत्पत्ति में आदम और हव्वा का इतिहास आदम की वाचा की सभी आशीषों का स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं करता है। लेकिन उत्पत्ति 1:22, 28 अन्तर्निहित करता है कि पृथ्वी पर बढ़ना और शासन करना स्वयं में आज्ञाकारिता की आशीषें थीं। इस विचार की पुष्टि बाद के पवित्र शास्त्रों के द्वारा की जाती है जो संतान की आशीष की ओर इशारा करते हैं, जैसे कि व्यवस्थाविवरण 7:14, पृथ्वी के ऊपर शासन की आशीष, जैसे कि 2 तिमुथियुस 2:12।

आगे, उत्पत्ति 3:22-24 में वाटिका से आदम और हव्वा का निष्कासन इरादातन था, कम से कम कुछ मायनों में, जीवन के वृक्ष तक उनकी पहुँच को रोकने के लिए। यदि वे आज्ञाकारी बने रहते, तो वे उसका फल खाने के योग्य होते, जो उन्हें परमेश्वर की संगति और तत्काल उपस्थिति में हमेशा रहने की अनुमति देता। इस तरह, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अनंत जीवन भी उनकी आज्ञाकारिता के बदले इनाम स्वरुप उन्हें मिला होता। और इस निष्कर्ष को रोमियों 5:12-19 के द्वारा बल मिलता है, जो सिखाता है कि यीशु ने हमारे लिए वहाँ सफल होकर जीवन प्राप्त किया जहाँ आदम विफल रहा था।

इसके अलावा, क्योंकि आदम मानव जाति का वाचा वाला मुखिया था, उसकी वफादारी और बेईमानी के परिणाम सभी मानवता के लिए जीवन और मृत्यु की वजह थे। दुःख की बात है कि आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रति बेईमान निकले, इसलिए उन्हें और उनके सभी साधारण या प्राकृतिक वंशजों को पाप, भ्रष्टता और मृत्यु के अधीन कर दिया गया। लेकिन परमेश्वर के दिव्य परोपकार का अभी भी बोल-बाला है, और उसने अपने प्रतिज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता यीशु मसीह के माध्यम से छुटकारे का मार्ग प्रदान किया है।

उपसंहार

शुरूआत में मनुष्य किस के समान थे नामक इस पाठ में, हमने मानवता की सृष्टि को बाइबल की कहानियों और उनकी ऐतिहासिकता, और बाकी सृष्टि के ऊपर मानवता की श्रेष्ठता के संदर्भ में देखा। हमने अपनी संरचना को भौतिक शरीर और अभौतिक आत्माओं के रूप में भी वर्णित किया है। और परमेश्वर की ईश्वरीय परोपकारिता, मनुष्य की विश्वासयोग्यता जो वह हमसे चाहता था, और आज्ञाकारिता एवं अवज्ञा के परिणामों के संदर्भ में हमने परमेश्वर के साथ मानवता के शुरूआती वाचा के संबंध पर विचार किया है।

सृष्टि किए जाने के समय मानवता में परमेश्वर द्वारा निवेश की गई गरिमा और आदर के बारे में सोचना आश्चर्यजनक है। जाहिर है, पाप से हमें बहुत ज़्यादा तकलीफ हुई है। लेकिन मनुष्य के लिए परमेश्वर के डिजाइन को जानना उस पाप पर क़ाबू पाने की उसकी योजनाओं को समझने की दिशा में, और मानवता और बाकी सृष्टि को उसकी इच्छित महिमा के लिए फिर से स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण पहला कदम है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।